DETAILS EXPLANATIONS

Paper Code : RPSCEE34 | : RPSCCE34 | RPSCME34

[अनुभाग-अ]

1. **(क)** (i) ब्रह्माण्ड (ii) जगदीश
(ख) (i) दया + उदय (ii) वाक् + अम्बर

2. **(क)** (i) दिन रात (ii) अतिसार
(ख) (i) सेवा के लिए (ii) ठीक तरह यंत्रण

3. **(क)** (i) अत्यधिक (ii) प्रतिकार
(ख) (i) पर (ii) कु

4. **(क)** (i) लघुत्तर (ii) दीर्घत्तम
(ख) (i) इक (ii) कार

5. **(क)** (i) जलद (ii) रत्नाकर
(ख) (i) कृतघ्न (ii) हानि

6. (i) एकता – गंदगी (ii) समूह – डंठल

7. (i) अनुश्रुति (ii) अतर्क्य / तर्कातीत
(iii) अनपेक्षित (iv) अवध्य

8. (i) आओ (ii) उद्धत
(iii) आर्द्र (iv) इष्ट

9. (i) वह उत्तीर्ण हो गया।
(ii) वह वेतन नहीं ले पाई।
(iii) लडके के हाथ भेज देना।
(iv) उसे रस्सी से बांधकर मारा।

10. (i) **अर्थ** : बहुत बड़ी आपत्ति आना।
वाक्य में प्रयोग : सरोज का एक ही लडका था और वह एक्सीडेन्ट में मारा गया। उस बेचारी पर तो आसमान ही टूट पड़ा।

(ii) **अर्थ** : बहुत प्रिय।
वाक्य में प्रयोग : श्रीकृष्ण गोकुल में सबकी आँखों के तारे।

(iii) **अर्थ** : मृत्यु हो जाना।
वाक्य में प्रयोग : मैं अपने दादाजी से उनके अंतिम समय में बात भी नहीं कर सका, मैं घर पहुँचा उसके पहले ही उनकी आँखे बन्द हो चुकी थी।

(iv) **अर्थ** : बराबर समझना।
वाक्य में प्रयोग : अध्यापक को अपने सभी विद्यार्थीयों को एक ही आँख से देखना चाहिए।

(v) **अर्थ** : चुपचाप दुःख सहन करना।
वाक्य में प्रयोग : रवि बहुत गंभीर व्यक्ति है। वह अपना दुःख किसी को कहता नहीं बस आँसू पीता रहता है।

(vi) **अर्थ** : गुप्त योजना बनाना।

वाक्य में प्रयोग : दो घण्टे से सारे घर वाले दरवाजा बन्द कर बैठे हैं पता नहीं क्या खिचड़ी पका रहे हैं।

(vii) **अर्थ** : मरने के दिन निकट आना।

वाक्य में प्रयोग : आजकल वह पुलिस से भी भिड़ने लग गया है। लगता है चींटी के पर निकल आए हैं।

(viii) **अर्थ** : मौज करना।

वाक्य में प्रयोग : जो व्यक्ति युवा अवस्था में अच्छी मेहनत करके परीक्षा में सफलता प्राप्त कर लेता है वह फिर उम्र भर चैन की बंशी बजाता है।

11. (i) **अर्थ** : निरर्थक बैठे रहने की बजाय कम लाभ के लिए कुछ न कुछ काम करना।

वाक्य में प्रयोग : मैं उसे बार–बार समझता रहता हूँ कि बैठे से बेगार भली पर वह खाली बैठना ही पसन्द करता है।

(ii) **अर्थ** : उच्चपद प्राप्त करके किसे घमण्ड नहीं होता।

वाक्य में प्रयोग : गाँव का साधारण सा लड़का था, अफसर बनने पर किसी से बात भी नहीं करता था। सच ही कहा है– प्रभुता पाहीं, काही मद नाहिं।

(iii) **अर्थ** : काम बिगड़ जाने पर यह कहना कि यह तो किया ही एसे गया था।

वाक्य में प्रयोग : फैल हो गया तो रमेश कहता है ड़िवीजन खराब हो रहा था इसलिए जान बूझकर फेल हो गया यह तो वही बात हुई कि फिसल पड़े तो हर गंगा।

(iv) **अर्थ** : बिना प्रयास करे किसी अयोग्य व्यक्ति को फल प्राप्त हो जाना।

वाक्य में प्रयोग : सुधीर सड़क पर लॉटरी का टिकट मिल गया और संयोग से लॉटरी उसी टिकट से खुल गई, यह तो बिल्ली के भाग से छींका टूटा है।

(v) **अर्थ** : किसी से कोई मतलब नहीं होना।

वाक्य में प्रयोग : मुझे दिनेश और शुभम के झगड़े में मत घसीटों मैं अपने हाल में मस्त रहता हूँ। मेरा न ऊधो का लेना न माधो का देना।

(vi) **अर्थ** : अवांछित एवं अनुचित हस्तक्षेप करना।

वाक्य में प्रयोग : पति–पत्नी में नोक–झोक हो रही थी पडोसी ने टोका कि आपस में क्यू लड़–झगड़ रहे हो पत्नी से तपाक से जवाब दिया कि हम आपस में सुलट लेंगे आप दाल भात में मूसलचन्द क्यों।

(vii) **अर्थ** : सही न्याय करना।

वाक्य में प्रयोग : जब चाची झूठ बोलने लगी तो दादी की गवाही से दूध का दूध और पानी का पानी हो गया।

(viii) **अर्थ** : छोटे से स्वार्थ के लिए बडा नुकसान करना।

वाक्य में प्रयोग : आजकल रेलगाडियों में एसे चोर चलते हैं कि यात्री से थोड़ा सा धन लूटने के लिए उसका कत्ल भी कर देते हैं, ये लोग टके के लिए मस्जिद तोड़ने के लिए तैयार रहते हैं।

12. (i) दवाब (ii) अभिरक्षा

(iii) जाली/कूटरचित (iv) निरपराध

(v) श्रद्धांजली (vi) निषिद्ध/अयुक्त

(vii) सेवानिवृति वेतन (viii) सत्यापन

[अनुभाग-ब]

13. (i) महल और स्थित तालाब।

(ii) राज्य पुरातत्व विभाग ने उसे दर्शकों के लिए बंद कर दिया था।

(iii) पद्मला और रानीहौद

(iv) पद्मला तालाब में

14. (i) विनाशकाले विपरीत बुद्धि।

जब व्यक्ति कै विनाश के दिन आते हैं तब उसको बुद्धि विपरीत आचरण करने लगती है एसी स्थिति के आने पर अच्छे लोगों की बुद्धि भी भ्रमित होकर गलत कार्य करने लगती है। और व्यक्ति जान बूझकर हानिप्रद कार्य करने लगता है।

(ii) हिंसा बुरी चीज है पर दासता उससे भी बुरी चीज है।

हिंसा से दसूरों का जीवन नष्ट होता है अतः वह बुरी है, परन्तु दासता में आदमी जीवित होते हुए भी मृत के समान होता है अतः दासता भी बुरी है।

17. आत्मिक शिक्षा किस प्रकार दी जाए? मैं बालकों से भजन गवाता, उन्हें नीति की पुस्तके पढ़कर सुनाता, किन्तु इससे मुझे संतोष न होता था। जैसे–जैसे मैं उनके संपर्क में आता गया, मैंने यह अनुभव किया कि यह ज्ञान पुस्तकों द्वारा तो दिया ही नहीं जा सकता। शरीर की शिक्षा जिस प्रकार शारिरिक कसरत द्वारा की जाती है और बुद्धि की बौद्धिक कसरत द्वारा, उसी प्रकार आत्मा की शिक्षा आत्मिक कसरत द्वारा की जाती है।

○○○